

अध्याय-प्रथम

शोध परिचय

## अध्याय प्रथम

### शोध परिचय

#### 1.1 प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने विद्यालय के अनाकर्षक परिवेश, भवनों की असंतोष जनक दशा और शिक्षा सामग्री का अभाव इन बातों पर चिंता व्यक्त की है। वर्तमान में शिक्षा की स्थिति को देखने पर इसमें क्रांति की आवश्यकता दृष्टिगोचर होती है। इसके लिये प्रत्येक विषय में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्ति हेतु नये उपागमों की खोज करना तथा विद्यार्थियों के हित में शोध करना मूलभूत आवश्यकता बन गयी है।

भूगोल विषय विद्यार्थियों की शैक्षिक दृष्टि से तथा दैनंदिन व्यवहार की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है। भूगोल शिक्षण में अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक कठिनाई होती है, क्योंकि भूगोल विषय में अधिकांश पाठ्यवस्तु विद्यार्थी के अनुभव क्षेत्र से बाहर होती है। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को भूगोल का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं रहता, यही कारण है कि भूगोल का ज्ञान विद्यार्थी को शुद्ध रूप से देना कठिन होता है। इसलिए भूगोल के शिक्षक को भूगोल का उचित ज्ञान प्रदान करने के लिए प्रत्यक्ष अनुभव के साथ-साथ कुछ शिक्षण सामग्री का भी प्रयोग करना पड़ता है। संबंधित अध्ययन भूगोल विषय में शैक्षिक सामग्री के प्रयोग से कक्षा 8 के विद्यार्थियों के भूगोल विषय में ज्ञान प्राप्ति पर क्या प्रभाव होगा इसके लिए किया गया है।

## 1.2 भूगोल का उद्भव एवं विकास

आज का भूगोल हजारों वर्षों से संचित ज्ञान का परिणाम है। प्रारंभ में भूगोल का जन्म यात्राओं से हुआ ।

थेल्स प्रथम व्यक्ति था जिसने भूगोल की शुरुआत की। भूगोल का शाब्दिक अर्थ होता है, 'गोल पृथ्वी' माल्टन (1872) ने भूगोल के अंदर पृथ्वी के प्रत्येक भाग की मिट्टी, वनस्पती, नदियाँ जलवायु, पशु और मनुष्य जो एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, इनको सम्मिलित किया है। मैकिण्डर (1887) ने बताया कि भूगोल का मुख्य उद्देश्य मानव और वातावरण के परस्पर सामंजस्य का पता लगाना हैं। संक्षिप्त में यह कहा जाता है कि भूगोल का उद्भव यात्राओं से हुआ। तब से लेकर आज तक के अनेक भूगोल विद्वानों ने इसके विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

## 1.3 भूगोल की परिभाषा

भूगोल के बारे में जानने के लिए भूगोल की परिभाषाएँ समझना पड़ेगी। भूगोल की कुछ मुख्य परिभाषाएँ निम्नांकित हैं-

### ★ कार्ल रिटर (1833)

“भूगोल विज्ञान का वह भाग है जो संपूर्ण पृथ्वी को एक संपूर्ण घटक मानते हुए उसके विभिन्न लक्षणों, तथ्यों, एवं संबंधों का अध्ययन करते हुये पृथ्वी का संबंध मनुष्य एवं जगत निर्माण से स्पष्ट करता है।”

### ★ हार्टशोर्न (1939)

“भूगोल पृथ्वी को मनुष्य की दुनिया की तरह मानकर पृथ्वी का वैज्ञानिक विवरण देने का प्रयास करता है।”

★ ईकरमेन (1911)

“भूगोल भूपटल की भौतिक परिस्थितियों का वर्णन, व्याख्या और तुलनात्मक अध्ययन करता है, और साथ ही मानवीय व्यापारों की विवेचना भी करता है।”

★ शब्दकोष अनुसार

“भूगोल पृथ्वी तल और पृथ्वी पर रहने वाले निवासियों का विज्ञान है।”

★ ग्रिट्थि टेलर (1951)

“भूगोल का कार्य पृथ्वी के भावी नागरिकों को इस प्रकार प्रशिक्षित करना है कि वे विश्व के विशाल रंगमंच की परिस्थितियों की ठीक-ठीक कल्पना कर सकें, और पर्यावरण की समस्याओं पर बुद्धिमत्ता पूर्वक चिन्तन करने में उन्हें सहायता प्राप्त हो सकें।”

आधुनिक भूगोल मानव की आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक और भौतिक समस्याओं का अध्ययन करता है, साथ ही साथ यह भी अध्ययन करता है कि प्रकृति एवं मानव एक दूसरे के कितने समीप है।

1.4 भूगोल का अर्थ

शाब्दिक अर्थ में भूगोल का अर्थ होता है ‘गोल पृथ्वी’ अर्थात् पृथ्वी गोल का वर्णन जो विषय करता है, वह भूगोल है। अगर अंग्रेजी के शब्द Geography की यदि फोड़ करे तो इसके दो भाग होंगे- (Geo+Graphy) जिसमें Geo का अर्थ है पृथ्वी और Graphy का अर्थ है वर्णन करना। अर्थात् Geography का अर्थ हुआ पृथ्वी का वर्णन करना। भूगोल पृथ्वी का वर्णन ही नहीं

करता है बल्कि पृथ्वी का वर्णन मानव संदर्भ में करता है। भूगोल मानव का उसके वातावरण के साथ समायोजन का अध्ययन करता है।

भूगोल एक एकीकृत विज्ञान है। जिस विषय सामग्री का यह विवेचन करता है, वह सामग्री मानव और वातावरण से संबंधित होती है। भूगोल यह खोज करता है कि एक वातावरण दूसरे वातावरण से क्या संबंध है, साथ ही मानव और भौगोलिक वातावरण एक दूसरे पर क्या क्रिया प्रतिक्रिया करते हैं, मनुष्य का वातावरण से क्या संबंध है। यह मुख्य विचारधारा है।

भूगोल वह विज्ञान है जो मनुष्य को वातावरण से जुड़ने की कला सिखाता है।

## 1.5 भूगोल के प्रकार

मुख्यतः भूगोल को दो भागों में बाटा जाता है:-

I प्राकृतिक भूगोल

II मानव भूगोल

### I प्राकृतिक भूगोल

“पृथ्वी पर पाये जाने वाली आकृतियों का क्रमबद्ध अध्ययन तथा उनका आपस में संबंध ही प्राकृतिक भूगोल है।” प्राकृतिक भूगोल के अन्तर्गत पृथ्वी की स्थलाकृति, जलमंडल, वायुमंडल के साथ-साथ सूर्य मंडल का अध्ययन मानव के संदर्भ में किया जाता है।

प्राकृतिक पर्यावरण का अध्ययन ही प्राकृतिक भूगोल है। जो कि ग्लोब की धरातलीय उच्चावचन, सागर महासागरों तथा वायु के विवरणों का अध्ययन करता है। प्राकृतिक भूगोल सामान्य

रूप में भूविज्ञानों का अध्ययन एवं समन्वय है। प्राकृतिक भूगोल में प्राकृतिक पर्यावरण के क्रमबद्ध अध्ययन के साथ भौतिक पर्यावरण तथा मानव के मध्य पारस्परिक क्रियाओं का भी अध्ययन किया जाने लगा है। स्पष्ट है कि वर्तमान समय में प्राकृतिक भूगोल के अध्ययन के अंतर्गत स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल, तथा जीवमंडल के क्रमबद्ध अध्ययन तथा इनके मध्य पारस्परिक क्रियाओं एवं अन्तर्संबंधों के अध्ययन को सम्मिलित किया जाता है। प्राकृतिक भूगोल के निम्नांकित भाग हैं-

- ★ वनस्पती भूगोल
- ★ सागर विज्ञान
- ★ भू-आकृति विज्ञान
- ★ जलवायु विज्ञान
- ★ प्राणी भूगोल

## II मानव भूगोल

### ★ मानव भूगोल की परिभाषा

#### 1. सम्पस (1911)

“मानव भूगोल क्रियाशील मानव और पृथ्वी के परिवर्तनशील संबंध का अध्ययन।”

#### 2. हॅरटिंगटॉन (1920)

“मानव भूगोल भौगोलिक वातावरण और मानव कार्यकलाप एवं गुणों के संबंध के फलस्वरूप और विवरण का अध्ययन है।”

### 3. जीन (1920)

“मानव भूगोल उन सभी वस्तुओं का अध्ययन है जो मानव कार्य कलाप द्वारा प्रभावित हैं और जो हमारी पृथ्वी के धरातलीय पदार्थों की एक विशेष कोटि में रखे जा सकते हैं।”

मानव भूगोल को मुख्यतः प्राकृतिक वातावरण और मानव कार्य कलाप इन दोनों के पारस्परिक संबंध के परिणाम के पार्थिव स्वरूप की खोज माना है।

मानव भूगोल एक ऐसा विषय है जिसके अंतर्गत सभी मानवीय क्रिया कलापों का विस्तार से वर्णन किया जाता है। वास्तव में मानव भूगोल की विषयवस्तु के अंतर्गत मानव तथा मानव समुह एक दुसरे के प्रति कितना उत्तरदायी है, इसके अध्ययन पर बल दिया जाता है। इसलिए सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से मानव भूगोल का स्थान उच्च माना जाता है। विश्व की एकता, उसके विभिन्न भागों की निर्भरता, नागरिकों के रूप में सही दृष्टिकोण अपनाना, तथा उनके विभिन्न कार्यों तथा संबंधित घटनाओं, तथ्यों कारकों आदि को मानव भूगोल के अध्ययन द्वारा ही समझा जा सकता है। मानव भूगोल के निम्नांकित भाग हैं-

- ★ आर्थिक भूगोल
- ★ राजनैतिक भूगोल
- ★ ऐतिहासिक भूगोल
- ★ सामाजिक भूगोल
- ★ शहरी भूगोल

- ★ बाजारी भूगोल
- ★ चिकित्सा भूगोल
- ★ कृषि भूगोल

## 1.6 भूगोल शिक्षण का स्वरूप

ऐतिहासिक घटनाओं से लेकर किसी क्षेत्र का धरातलीय स्वरूप (भौतिक तथा मानव निर्मित) आधारित, उदयोग धंधे, यातायात, संचार साधन, रिति-रिवाज, आचार-विचार, व्यवहार तथा परम्परा, आदि समस्त सामाजिक क्रिया कलापों को ठीक ढंग से समझने के लिये भौगोलिक तथ्यों के ज्ञान की आवश्यकता होती है। इसके अलावा पृथ्वी की स्थलाकृति, वायुमंडलीय परिघटना, आदि में तथ्यों का ज्ञान होता है इतना ही नहीं भूगोल विषय में अध्ययन से मानसिक विकास होता है। वह विद्यार्थी जिन्हें भूगोल का ज्ञान होता है वह अपने को विश्व का नागरिक मानने से इन्कार नहीं कर पाता। अतः प्राथमिक स्तर पर भी यह एक महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि प्राथमिक स्तर पर जो ज्ञान विद्यार्थी को दिया जाता है वही उनकी भविष्य के ज्ञान की नीव होती है। अतः यह सबसे बड़ी जिम्मेदारी शिक्षकों की है कि वे किस प्रकार से विद्यार्थियों को विषय का ज्ञान देते हैं परन्तु वर्तमान में जिस तरीके से विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है वह अरुचिकर साबित होता है। विद्यार्थी भी केवल परीक्षा पास करने के दृष्टि से भूगोल का अध्ययन करते हैं। और फिर समयांतर में सब कुछ भूल जाते हैं। अतः यह शिक्षकों का दायित्व है कि वे भूगोल विषय को इस तरीके से पढ़ाये कि विद्यार्थी अपने भूगोल का ज्ञान अधिकाधिक मजबूत कर सकें, अगर भूगोल विषय पाठ्यपुस्तक विधि से रटवा दिया गया तो निश्चित है कि केवल उस कक्षा की परीक्षा तक तो

उन्हें याद रहेगा, लेकिन वे बाद में उसे भूल जायेंगे। तथा यह ज्ञान उनके किसी काम में नहीं आयेगा। मगर आज भूगोल अध्यापन करते वक्त अधिकतर अध्यापक इसी तरीके से अध्यापन करते हैं। और अपने अध्यापन में शैक्षिक सामग्री का उपयोग नहीं करते मगर विद्यार्थी की दृष्टि से यह बात बहुत ही बुरी है। अध्यापन इस तरीके से होना चाहिए कि विद्यार्थी उस ज्ञान को दीर्घकाल तक याद रख सकें।

### 1.7 भूगोल शिक्षण के उद्देश्य

भूगोल शिक्षण मनुष्य के लिये उपयुक्त हैं। भूगोल शिक्षण के निम्नांकित उद्देश्य हैं-

- ★ भूगोल द्वारा स्थलसंबंधी ज्ञान प्रदान करना।
- ★ भूगोल द्वारा व्यावसायी कृषि तथा उद्योग धंधों का ज्ञान प्रदान करना।
- ★ जीवन के लिए विभिन्न प्रदेशों की भौगोलिक परिस्थितियों की जानकारी में सहायता देना।
- ★ समाचार पत्रों में आने वाले संदर्भों का स्पष्टीकरण करना।
- ★ पर्यटन की इच्छा को जागृत करना।
- ★ स्वदेश प्रेम की उत्पत्ती करना।
- ★ प्राकृतिक सौंदर्य का सच्चा ज्ञान देना।
- ★ मानव और पृथ्वी संबंधी दृष्टि से संसार का मूल्यांकन करना।
- ★ भौगोलिक परिस्थिति को समझना।
- ★ विश्व परिवार की भावना का विकास करना।

- ★ भूत और वर्तमान परिस्थितियों से परिचित होने का कौशल निर्माण करना।
- ★ भौगोलिक पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना।

## 1.8 भूगोल शिक्षण की विधियाँ

भूगोल का पाठ्यक्रम विभिन्न विषयों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भूगोल प्राकृतिक विज्ञान और मानवशास्त्र दोनों के बीच की कड़ी है। किसी भी विषय के पढ़ाने के उद्देश्य ही उसकी शिक्षण विधियों को निर्धारित करते हैं। क्योंकि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उचित प्रकार की शिक्षण विधियों का होना आवश्यक है।

भूगोल के अर्थ, ज्ञान एवं उसकी विषय-वस्तु के विकास के साथ-साथ भूगोल की शिक्षण विधियाँ भी बदलती गईं। विद्यालय के पाठ्यक्रम में भूगोल के अतिरिक्त संभवतः दुसरा कोई ऐसा विषय नहीं है जो इनती विभिन्न पद्धतियों से पढ़ाया जाता है। भूगोल शिक्षक को केवल पाठ्यसामग्री का ही समुचित ज्ञान नहीं, भूगोल शिक्षा हर स्तर पर किस विधि से पढ़ाना है इसका ज्ञान होना नितांत आवश्यक है। उसे शिक्षण विधियों को निश्चित करने में बालको की आयु, पाठ्य-वस्तु की प्रकृति उनकी रुचि एवं उनकी योग्यता का ध्यान रखना अति आवश्यक है। भूगोल की शिक्षण विधि एक मिश्रित विधि है।

भूगोल की कुछ प्रमुख विधियाँ इस प्रकार से हैं-

- ★ निरीक्षण या प्रेक्षण विधि
- ★ वर्णनात्मक विधि

- ★ भ्रमनात्मक विधि
- ★ प्रादेशिक विधि
- ★ तुलनात्मक विधि
- ★ आगमन विधि
- ★ निगमन विधि
- ★ विचार विमर्श विधि
- ★ पाठ्यपुस्तक विधि
- ★ योजना विधि
- ★ समस्या विधि
- ★ प्रयोगशाला विधि या वैज्ञानिक विधि

### 1.8.1 निरीक्षण विधि

मस्तिष्क की उस क्रिया को जिसमें किसी वस्तु को देखकर उसकी विशेषताओं का सही ज्ञान प्राप्त किया जाए निरीक्षण कहते हैं।

भूगोल शिक्षण की यह विधि सभी स्तरो पर उपयुक्त मानी गई है परन्तु प्रारंभिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है। प्राथमिक कक्षाओं का बालक प्राथमिक अवस्था में अपने घर ग्रामीण एवं नागरिक वातावरण के सम्पर्क में आता है, और इस प्रकार वह उस वातावरण के निरीक्षण के माध्यम से भौगोलिक तथ्यों सामान्य प्रत्ययों और सरल सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त करता है। भूगोल की शिक्षा को सजीव और मनोरंजक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि छात्र भौगोलिक वस्तुओं को अपनी आँखों से देखें। विद्यार्थी अपने स्थानीय भूगोल

का निरीक्षण करके दूसरे स्थानों की परिस्थितियों एवं वातावरण की कल्पना कर सकेंगे।

इस विधि का प्रयोग विशेष रूप से प्राकृतिक मानवीय एवं आर्थिक भूगोल का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। धरातल की रचना नदी कार्य, जंगलो का उगना, बादल, सुर्य के उदय व अस्त होने का समय, न्यूनतम अधिकतम ताप की माप, वर्षा की माप, पहाड़, मैदान झरना, आदि का निरीक्षण, वर्षा की मात्रा, मौसम का बदलना आदि बातों का निरीक्षण प्राकृतिक भूगोल के अंतर्गत कराया जा सकता है।

### 1.8.2 वर्णनात्मक विधि

भूगोल शिक्षण में वर्णनात्मक विधि एक प्राचीन विधि है। भूगोल में वर्णनात्मक विधि से तात्पर्य भौगोलिक वर्णन है। देश के विभिन्न भागों तथा दूसरे देशों के निवासियों के जीवन एवं वहां के दृश्यों का वर्णन भूगोल की एक बहुत महत्वपूर्ण बात है। इस वर्णन को बच्चों बड़े रुचि से सुनते हैं। इसमें बालकों की कल्पना शक्ति का विकास होता है। भौगोलिक वर्णन को मानचित्र, रेखाचित्र, ग्लोब, प्रोजेक्टर, श्यामपट्ट एवं अन्य सहायक सामग्री की सहायता से आकर्षक एवं रुचिकर बनाना चाहिए। प्रारंभिक कक्षाओं हेतु यह विधि उपयुक्त रहती है। भूगोल के विकास में प्रारंभिक समय में यही विधि काम में लायी जाती थी।

भौगोलिक वर्णन निम्न प्रकार के हो सकते हैं।

- ★ पृथ्वी के जन्म का वर्णन
- ★ पृथ्वी के विकास का वर्णन
- ★ पृथ्वी के मानव एवं कार्यकलापों का वर्णन

### 1.8.3 भ्रमनात्मक विधि

यह एक महत्वपूर्ण विधि है। भूगोल का अधिकांश भाग मस्तिष्क की अपेक्षा पैरों द्वारा सीखा जाता है। यह विधि स्थूल से सुक्ष्म की ओर चलती है। इस विधि से भौगोलिक तथ्यों की जानकारी प्राप्त की जाती है। निरीक्षणात्मक विधि और भ्रमणात्मक विधि का घनिष्ठ संबंध है। वास्तव में निरीक्षणात्मक विधि का ही विस्तृत रूप भ्रमणात्मक विधि है। भ्रमनात्मक विधि के द्वारा विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर ले जाकर प्रकृति के संपर्क में लाया जा सकता है। और वे भूगोल की बातों को निरीक्षण के माध्यम से सीखते हैं, प्राथमिक स्तर पर छात्रों को निकटस्थ क्षेत्र का ही भ्रमण कराया जा सकता है। जबकि माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर भ्रमण की दूरी क्रमशः बढ़ाई जा सकती है।

### 1.8.4 प्रादेशिक विधि

20वीं शताब्दी के प्रारंभ तक भूगोल का शिक्षण राजनैतिक भागों को इकाइयों मानकर कराया जाता था। जैसे भारत, जापान, अमेरिका, आदि। प्रत्येक देश का भौगोलिक वर्णन उसकी स्थिति, प्राकृतिक दशा, जलवायु, उपज, पशु, यातायात, के साधन, व्यापार, मानव जीवन के आधार पर किया जाता था। एक देश के बाद दूसरे का वर्णन भी इसी क्रम से किया जाता था यह विधि बालकों का समय नष्ट करने वाली तथा कठिन व नीरस होती है।

- ★ प्रादेशिक पद्धति से तात्पर्य है:- सारे विश्व को विभिन्न प्राकृतिक प्रदेशों में विभक्त करना।
- ★ प्रत्येक प्राकृतिक विभाग का कुछ निश्चित शीर्षकों के अन्तर्गत अध्ययन किया जाता है।

### 1.8.5

#### तुलनात्मक विधि

यह पद्धति शिक्षाशास्त्र के महत्वपूर्ण सिद्धांत 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' के आधार पर भूगोल का ज्ञान प्रदान कराती है। इस विधि में स्थानीय भूगोल को आधार माना जाता है और अन्य प्रदेशों की तुलना की जाती है। इस विधि में किन्हीं दो या उससे अधिक भू-भागों की समानता विभिन्नता, संतुलन तथा समन्वय पर जोर दिया जाता है।

तुलनात्मक विधि से भूगोल पढ़ते समय किन्हीं दो प्रदेशों की समानता-असमानता दोनों ही बताना आवश्यक है। असमानता बताने से मस्तिष्क में एक संबंध जुड़ता है, इससे ज्ञान स्थायी हो जाता है। तुलनात्मक विधि से भूगोल पढ़ते समय रेखाचित्रों का उपयोग करना बहुत आवश्यक है। एक प्रदेश के उपज, जनसंख्या क्षेत्रफल व आयात-निर्यात की तुलना दूसरे देशों के आकड़ों से करते हैं। बच्चे तुलनात्मक अध्ययन को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं।

### 1.8.6

#### आगमन विधि

इस विधि के अंतर्गत विद्यार्थियों के सामने अनेक उदाहरण रखे जाते हैं। विद्यार्थी इन उदाहरणों के आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं। जैसे भारत के दक्षिणी भाग के विभिन्न भागों के शहरों के तापमान के बारे में विद्यार्थियों को बताया जाए, पुनः उत्तरी भारत में शहरों का तापमान बताया जाये फिर विद्यार्थियों को निष्कर्ष निकालने को कहा जाये तो दोनों प्रदेशों के तापक्रम की भिन्नता संबंधी निष्कर्ष विद्यार्थी निकालेंगे कि दक्षिण के शहर उत्तर के शहरों से अधिक गर्म हैं।

कहलायेंगी इस तरह विधि विशिष्ट से सामान्य और संपूर्ण से अंश की ओर चलती है।

आगमन विधि एक ऐसी विधि है जिसमें स्वयं तक्र के आधार पर निर्णय लेते हैं। इससे विद्यार्थियों की विचार शक्ति का विकास होता है। विद्यार्थियों की क्रियाशीलता के सिद्धांत के अनुसार कार्य करने का मौका मिलता है।

### 1.8.7 निगमन विधि

यह विधि आगमन विधि से बिल्कुल विपरित है। इसमें सामान्य से विशिष्ट की ओर चलते हैं। इस विधि में शिक्षक पहले सामान्य नियम का स्पष्टीकरण करता है फिर विशिष्ट उदाहरणों द्वारा उस सामान्य नियम की पुष्टि करता है।

जैसे शिक्षक छात्रों को पहले सामान्य नियम बता देगा कि रेगिस्तान गर्म और शुष्क होते हैं। इसके बाद इस नियम का स्पष्टीकरण वह अरब, सहारा, थर, एवं शुष्कता के उदाहरण देकर करेगा, जिससे सामान्य नियम की पुष्टि हो जाये। इस विधि में पहले नियम बताकर उस नियम की सत्यता विशिष्ट उदाहरणों को प्रस्तुत करके की जाती है। इस विधि में ज्ञान प्राप्ति की गति काफी तेज होती है। दो या तीन विशिष्ट उदाहरणों से सामान्य नियम की सत्यता सिद्ध कर दी जाती है। छात्र और अध्यापक दोनों ही को कम परिश्रम करना पड़ता है।

### 1.8.8 विचार विमर्श विधि

इस विधि के अंतर्गत छात्र व शिक्षक दोनों ही मिलकर विषय पर प्रश्न-परिप्रश्न करते हैं। इस तरह अध्यापन किया जाता है। वस्तुतः यह विधि शिक्षण विधि की संपूर्ण प्रक्रिया नहीं कही जा सकती है। यह सिर्फ एक भाग की पूर्ति करती है। जैसे पहले

शिक्षक व्याख्यान देता है। बाद में वह उस विषय पर विद्यार्थियों के विचार आमंत्रित करता है। पुनः शिक्षक-विद्यार्थी दोनों ही प्रक्रिया में भाग लेते हैं।

विद्यार्थियों से किसी विषय पर पूर्व-गठन हेतु कह दिया जाए, जब वे तैयार होकर आये तथा शिक्षक अनेक प्रश्न-परिप्रश्न करके विचार-विमर्श की स्थिति पैदा करें। विचार विमर्श विधि का जन्म विद्यार्थियों के अधिकाधिक सहयोग को आमंत्रित करने के लिये हुआ।

#### 1.8.9 पाठ्यपुस्तक विधि

भारतीय स्कूलों में सबसे अधिक प्रचलित विधि पाठ्य-पुस्तक विधि है। भाषा के ज्ञान तथा प्रारंभिक सामाजिक ज्ञान के विषयों के लिये भी यह विधि महत्वपूर्ण रही है। सामान्य स्कूलों में पाठ्य-पुस्तक विद्यार्थी और शिक्षक दोनों के लिये सहायक हैं परन्तु पाठ्यपुस्तक द्वारा शिक्षण उतना महत्वपूर्ण नहीं होता है प्रायः इस विधि में शिक्षक पढ़ाता है, तथा आवश्यक बिन्दुओं के बारे में स्पष्टीकरण करता है। शिक्षक के समझाने पढ़ाने से जो बात समझ नहीं आती उसे छात्र पुस्तक के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं।

#### 1.8.10 योजना विधि

प्रोजेक्ट का अर्थ है- “एक समस्यामूलक कार्य को उसकी स्वाभाविक परिस्थितियों के अन्तर्गत पूरा करना।

इस विधि में विद्यार्थी स्वयं किसी उद्देश्य को लेकर योजना बनाते हैं इस उद्देश्य की प्राप्ति ही उनके लिए एक समस्या होती है। विद्यार्थी इस योजना को स्वयं ही पूरा करते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता है और समय-समय पर

आने वाली कठिनाईयों को दूर करता है। यह विधि विद्यार्थियों की क्रियाओं को अधिक महत्व देती है। विद्यार्थियों को कार्य करने की पर्याप्त स्वतंत्रता रहती है। इस प्रणाली में कक्षा अनेक समूहों में बाँट दी जाती है। प्रत्येक समूह अपने रुचि का काम ले लेता है। जैसे चित्र बनाना, मॉडल बनाना, नक्शे बनाना आदि ।

इस विधि में सफलता शिक्षक की योग्यता एवं उसकी युक्तिपूर्णतः तथा विद्यार्थियों के सहयोग पर निर्भर करती है।

### 1.8.11 समस्या विधि

समस्या विधि भी भूगोल की एक महत्वपूर्ण विधि है। इस विधि में विद्यार्थियों के सामने एक भौगोलिक समस्या रखी जाती है और वे उसके विषय में समस्त जानकारी प्राप्त करते हैं। विद्यार्थी स्वयं क्रिया करते हैं। विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। सोचते तथा विचार करते हैं। अध्यापक समस्या के बारे में निर्देशन देता है। समस्या का हल विद्यार्थी स्वयं निकालते हैं।

इस विधि का सबसे बड़ा गुण यह है कि इससे विद्यार्थियों के तर्क वितर्क शक्ति का विकास होता है। विद्यार्थी उस समस्या विशेष को गहराई के साथ सोचते हैं तथा उसका हल ढूँढ़ निकालते हैं। विद्यार्थियों को अनेक पुस्तकों पढ़ने का अवसर मिलता है। और इस तरह वे अच्छी पुस्तकों को पढ़ने हेतु उत्साहित होते हैं। समस्या का हल ढूँढ़ निकालने पर छात्रों को आत्मसंतोष मिलता है।

### 1.8.12 प्रयोगशाला विधि या वैज्ञानिक विधि

प्रयोगशाला विधि को वैज्ञानिक विधि भी कहते हैं। इस विधि में विद्यार्थी सक्रिय रहते हैं। विद्यार्थी शिक्षक द्वारा किये गये प्रयोगों को ब्रह्म ही ध्यानपूर्वक देखते हैं और उनमें भी अपने

हाथों से प्रयोगों के परिणाम निकालते हैं। इस विधि में विद्यार्थी अपने हाथों और आँखों दोनों का प्रयोग करते हैं।

#### उदाहरण-

- ★ वायु की दिशा व भार विभिन्न यंत्रों का प्रयोग करके पता लगाना।
- ★ दिन व रात का होना ग्लोब व एक दीपक की सहायता से समझना।

### 1.9 भूगोल शिक्षण सहायक सामग्री

भूगोल शिक्षण में अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक कठिनाई होती है क्योंकि भूगोल के विषय अधिकांश रूप में विद्यार्थी के प्रत्यक्ष अनुभव क्षेत्र से बाहर रहते हैं। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को किसी भौगोलिक वर्णन का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं रहता है। यही कारण है कि भूगोल में विषयों का ज्ञान शुद्ध रूप से देना कठिन होता है, इसलिये भूगोल के शिक्षक को भूगोल का उचित ज्ञान प्रदान करने के लिये प्रत्यक्ष अनुभव के साथ-साथ युक्तियों का भी प्रयोग करना पड़ता है। भूगोल में विषय सामग्री का स्पष्ट ज्ञान केवल शब्दों द्वारा ही नहीं होता है। इसलिये भूगोल शिक्षक उचित स्थान एवं मनोवैज्ञानिक समय पर सहायक सामग्री का प्रयोग करता है।

शिक्षण सहायक सामग्री अनेक हैं। जो शिक्षक को शिक्षण कार्य में सहायता प्रदान करती है। इस प्रकार की सामग्री, सीखने में मनोविज्ञान के प्रेरक और रुचि सिद्धांतों की पूर्ति भी करती है। भूगोल विषय तो बिना इस सामग्री का उपयोग किये पढ़ाया ही नहीं जा सकता। यदि कोई शिक्षक ऐसा करता है, तो

केवल पढ़ाने की खानापूर्ति ही करता है। विषय तथा विद्यार्थियों के प्रति न्याय नहीं करता।

सहायक सामग्री के प्रयोग से भूगोल शिक्षण में वास्तविकता व सजीवता आती है। विद्यार्थियों की भूगोल के विषय एवं पाठ में रुचि उत्पन्न होती है। क्योंकि सहायक सामग्री विभिन्नता के सिद्धांत को पूर्ण करती है। भूगोल की कठिन बातों एवं तथ्यों को सरल, बोधगम्य बनाने के लिये सहायक सामग्री आवश्यक है। प्रत्यक्ष अनुभव से प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है। उसे विद्यार्थी भूलते नहीं हैं। विद्यार्थियों में भौगोलिक तथ्यों को समझने उनकी व्याख्या करने, तर्क वितर्क एवं निष्कर्ष निकालने की शक्ति का विकास होता है।

शिक्षण सहायक सामग्री को तीन भागों में बाँट सकते हैं।  
दृश्य सामग्री, श्रव्य सामग्री, दृश्य और श्रव्य सामग्री

★ **दृश्य सामग्री-**

इसमें वह सामग्री आती है जिसके द्वारा छात्र आँखों के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करते हैं।

1. श्यामपट, 2. मानचित्र 3. ग्लोब, 4. एटलस 5. चार्ट, 6. ग्राफ, 7. चित्र 8. रेखाचित्र, 9. मॉडल, 10. स्टीरियो स्कोप, 11. पिडायस्कोप, 12. मैजिक लैन्टर्न आदि।

★ **श्रव्य सामग्री-**

1. टेप रिकार्डर 2. रेडियो आदि।

★ **दृश्य और श्रव्य सामग्री-**

1. चलचित्र 2. टेलीविजन आदि।

### 1.9.1 श्यामपटः

वैसे तो प्रत्येक विषय में श्यापट अध्यापक को अध्यापन करते व बड़ा सहायक है, परन्तु भूगोल में इसका प्रयोग और भी अधिक उपयोगी है। शिक्षक भूगोल की मुख्य बातें संक्षिप्त रूप में पाठ के सारांश के रूप में श्यामपट पर लिखता है। इसके साथ साथ भूगोल की अनेक बातें श्यामपट पर सुगमता व सफलता पूर्वक समझाई जा सकती हैं।

पर्वतों से नदी का निकलना, नदी से नहर का निकलना, झरने पर्वत, घाटियाँ किसी नगर की भौगोलिक स्थिति, ऋतुओं का होना, चन्द्रमा की कलायें, ज्वालामुखी पर्वत, सूर्यग्रहण, चन्द्रमाग्रहण आदि को आकृति द्वारा श्यामपट पर समझाया जा सकता है।

सुविधा व समय की बचत के लिए मानचित्र आदि लपेट श्यामपट पर पहले से ही बनाकर कक्षा में लाया जा सकता है। भूगोल शिक्षण में लंबे, चौड़े श्यामपट की आवश्यकता है। भूगोल शिक्षक को रंगीन खडियाँ का उचित ढंग से अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए।

### 1.9.2 भित्ती मानचित्र

भूगोल शिक्षण में भित्ती मानचित्रों का बड़ा महत्व है। भित्ती मानचित्रों के द्वारा एटलस के मानचित्रों में दिखाये गये भौगोलिक तथ्यों को बड़े आकार में दिखाया जाता है। तथा जो भौगोलिक तथ्य एटलस में न दिखाये जा सकते हो उनको भी भित्ती मानचित्र पर प्रदर्शित किया जा सकता है।

प्राकृतिक भूगोल के अध्यापन में दीवाल मानचित्र एक बहुत ही आवश्यक चित्र हैं। अध्यापक अपने पढ़ाने में किसी भी

भौगोलिक वस्तु का नाम दिवाल मानचित्र पर प्रदर्शित कर देता है। कभी कभी कुछ भौगोलिक बाते एटलस में नही दिखायी जाती। अध्यापक उनको भित्ती मानचित्रों की सहायता से छात्रों को दिखा देता है। आधुनिक युग में मानचित्रों का प्रयोग अत्याधिक बढ़ गया है। इसका प्रयोग विभिन्न वस्तुओं के वितरण, विभिन्न देशों अथवा प्रदेशों की तुलना एवं विविध जन कल्याण के कार्यों, आवागमन के साधन एवं बाढ़ नियंत्रण आदि के लिये किया जा सकता है। मानचित्रों की प्रमुख रूप से निम्न उपयोगिताएँ हैं।

- ★ किसी स्थान की संबंधित दूरी ज्ञात करना।
- ★ किसी स्थान की भौतिक एवं सांस्कृतिक जानकारी ज्ञात करना।
- ★ जलवायु के अध्ययन में सहायक।
- ★ प्राकृतिक मानचित्रों के आधार पर धरातल की बनावट से भी परिचय हो जाता है।
- ★ वितरण मानचित्रों के आधार पर दैनिक जीवन में मदद।
- ★ संपूर्ण विश्व के किसी भी कोने का अल्प समय में ही ज्ञान संभव।
- ★ विश्व के दो भागों की तुलना करने में मदद।

### 1.9.3 ग्लोब

पृथ्वी की आकृति की प्रतिमूर्ति को ग्लोब कहते हैं। प्रत्येक विद्यालय में ग्लोब का होना आवश्यक है। जिस प्रकार भित्ती मानचित्रों की तुलना में एटलस अधिक महत्वपूर्ण है। उसी प्रकार एटलस की तुलना में ग्लोब को अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। विद्यार्थियों को आरंभ में ही ग्लोब से परिचित करा

देना चाहिये। इसी से उनको पृथ्वी के सही आकार का ज्ञान हो सकता है। कक्षा 3में या इससे पूर्व विद्यार्थियों को ग्लोब दिखा देना चाहिये। एटलस या दीवार मानचित्र के प्रयोग से पहले ही उसकी जानकारी करा देनी चाहिये।

ग्लोब पृथ्वी का सबसे अधिक अच्छी तरह प्रतिनिधित्व करता है। बहुत सारी बातों को हम मानचित्रों द्वारा स्पष्ट नहीं कर सकते जैसे- पृथ्वी गोल है, पृथ्वी के विभिन्न भागों का वास्तविक एवं सापेक्षिक आकार, पृथ्वी पर जल-मंडल का वितरण, पृथ्वी तथा सूर्य का संबंध, चन्द्रकलाये, दिन-रात, आने जाने के मार्ग, अक्षांश व देशांतर, पृथ्वी की वार्षिक गति, मौसम, तापकटिबंध, जलवायु वनस्पति, वायु पिटियाँ, दिशायेँ प्राकृतिक प्रदेश, महाद्विपों- महासागरों के आकार व स्थिति का ज्ञान ग्लोब की सहायता से आसानी से कराया जा सकता है।

#### 1.9.4 एटलस

भूगोल की शिक्षा पूर्णतः मानचित्रों पर आधारित है। इसलिये एटलस भूगोल का अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण यंत्र है। दीवाल मानचित्रों की अपेक्षा एटलस अधिक महत्वपूर्ण मानी जाता है। एक अच्छी एटलस मानचित्र और ग्लोब, दोनों का कार्य करती हैं। किसी स्थान की विस्तृत जानकारी, दो प्रदेशों की तुलना अथवा भौगोलिक उलझनों को सुलझाने में एटलस सबसे अधिक मदद करता है।

वस्तुतः एटलस का भूगोल विषय में प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। यह एक प्रकार का विशिष्ट कोष है। जो छात्रों को भौगोलिक ज्ञान की अभिवृद्धि में मदद देता है। जब छात्र देश अथवा विदेश के नगरो, पहाड़ो, नदियों, झीलों, महत्वपूर्ण उद्योग

केन्द्रों, वर्षा के वितरण और भूमि के धरातल को देखना चाहते हैं, तब तो इसका प्रयोग अत्यावश्यक हो जाता है। नये नाम व नये संबंध एटलस में ढूंढे जा सकते हैं। इससे स्थानों की दूरी, दिशा, देशों, और प्रदेशों का यह आकार, विस्तार, व स्थिति का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त होता है। एटलस मानचित्रों का अभ्यास कराने के काम आती है। भूगोल शिक्षण में मानचित्रों का अभ्यास बड़ा उपयोगी है। विभिन्न भौगोलिक तथ्य और संबंध एटलस की सहायता से आसानी से समझ में आ जाते हैं। इससे विद्यार्थियों के समय व शक्ति की बचत होती है। एटलस के प्रयोग से विद्यार्थियों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत होती है।

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अवस्था के अनुसार मानसिक स्तर एवं ज्ञान पिपासा बढ़ने के साथ साथ एटलस का प्रयोग और भी आवश्यक हो जाता है।

इस स्तर पर एक अच्छे एटलस की आवश्यकता होती है। जिसमें भारत के सभी प्रकार के नक्से प्राकृतिक, राजनैतिक, विभिन्न राज्यों के नक्शों, प्रमुख उद्योगों, जनसंख्या, जलवायु, खनिज, और एशिया महाद्वीप के नक्शों होने चाहिए। इस स्तर पर भौगोलिक शब्दकोष को बढ़ाने की विशेष आवश्यकता होती है। अतः विभिन्न पहाड़ों, पठारों, नदियों, झीलों, नगरों, बंदगाहों, आवागमन के मार्गों का अभ्यास देने के लिए एटलस का प्रयोग बहुत आवश्यक होता है।

#### 1.9.5 चार्ट एवं रेखाचित्र

भूगोल शिक्षण में चार्ट की भी बहुत महत्वपूर्णता है। वर्षा, तापमान, उपज, क्षेत्रफल व जनसंख्या आदि को चार्टों द्वारा भूगोल

के पाठ्य विषय को सरल एवं रोचक बनाया जा सकता है। कुछ चार्ट ग्राफ के रूप में भी हो सकते हैं।

रेखाचित्रों का भूगोल शिक्षण में एक महत्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न भौगोलिक तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। जैसे ऋतु परिवर्तन, दिन-रात का होना, चंद्रमा की कलायें, उपज, आयात, निर्यात, विभिन्न नगरों का तापमान चंद्रमाग्रहण, सूर्यग्रहण आदि को रेखाचित्रों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। इसी प्रकार भूमि का कटाव, जल के प्रभाव को शिक्षक रेखा चित्रों की सहायकता से समझाता है, कि किस तरह पानी और हवा पृथ्वी के बाह्य धरातल पर परिवर्तन लाते हैं। शिक्षक को पाठ सरल एवं रुचिकर बनाने के लिये पढ़ते समय कक्षा में रेखाचित्र स्वयं बनाने चाहिये।

#### 1.9.6 मॉडल

मॉडल वास्तविक वस्तुओं का प्रतिरूप होता है। जिसमें लंबाई, ऊंचाई, चौड़ाई और मोटाई दी रहती है। इस नकल अथवा प्रतिरूप को देखकर हम वास्तविक वस्तु का अनुमान कर लेते हैं

भूगोल के ऐसे बहुत से पाठ हैं जिनमें चित्र आकृति से काम नहीं लिया जा सकता है। उनमें मॉडल से ही काम लिया जाता है। जिन भौगोलिक वस्तुओं को कक्षा में लाना संभव नहीं है, उन्हें मॉडल के रूप में विद्यार्थियों के समक्ष रखा जाता है। विद्यार्थियों से भूगोल विषय में संबंधित निम्न प्रकार के मॉडल बनवाये जा सकते हैं। टुण्ड्रा निवासियों का घर इग्लू, ज्वालामुखी, भुकम्प आदि। भूगोल में मॉडल का प्रयोग काफी होता है। इसका कारण है कि बहुत सारी बातें जुबानी तोर से छात्रों की समझ में नहीं आ पाती। उदाहरण, किसी बांध के महत्व को समझाना है। यह उस समय तक अच्छी तरह से समझ में नहीं आयेगा, जब

तक कि विद्यार्थियों को कोई किसी बांध दिखाया न जाय अथवा नमुना दिखाया ना जाय। जहाँ समय तथा धनाभाव हो वहाँ मॉडल बहुत कुछ समस्या को दूर करने में सहायक होगा। वैसे भी भूगोल में ग्लोब, जिसका इतना प्रभाव होता है, और जो पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करता है, पृथ्वी का एक मॉडल ही है।

### 1.9.7 नमूने

भूगोल में व्यवहारिक पक्ष का भी बहुत महत्व है। कहा तो यहां तक जाता है कि अधिकांश भूगोल पैरों के द्वारा जाना जाता है, बजाय मस्तिष्क के। इसका आशय है कि हम जितनी पृथ्वी के वास्तविकता को हो देखेंगे उतना ही भूगोल का वास्तविक ज्ञान बढ़ेगा। नमूने वास्तविक ज्ञानोपार्जन में काफी सहायता करते हैं। विभिन्न चट्टानों, खनिज, मिट्टी आदि पढ़ाते समय तो चट्टानों के खनिजों तथा मिट्टी के नमूने विद्यार्थियों को वास्तविकता के निकट पहुँचा देते हैं।

यही कारण है कि भूगोल में यात्राओं के समय जो-जो बातें उस क्षेत्र की दर्शनीय हैं, जिन-जिन बातों को देखा जाता है, उनके चित्रों एवं नमूनों का संग्रह किया जाता है। उदाहरण विभिन्न प्रकार के चट्टानों के नमूने, खनिजों के नमूने आदि।

### 1.9.8 एपिस्कोप

चित्र दिखाने वाला एक दुसरा यंत्र एपिस्कोप है। इस यंत्र में स्लाइड बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। लैन्टर्न की तुलना में यह यंत्र अधिक सुविधाजनक होता है। एपिस्कोप के द्वारा चित्र, चार्ट, मॉडल के बड़े रूप पर्दे पर दिखाये जा सकते हैं। इस यंत्र के द्वारा वस्तुओं के चित्र भी पर्दे पर प्रदर्शित किये जा सकते हैं।

### 1.9.9 रेडियो

हमारे देश में दिल्ली तथा अन्य राज्यों के केन्द्रों से प्रतिदिन प्रसारण होता रहता है। प्रसारण में हमको भूगोल के समाचारों तथा वार्ताओं को भी सुनने का अवसर प्राप्त होता है। जैसे- प्रतिदिन मौसम का विवरण, संसार के किसी देश में भुकम्प या ज्वालामुखी की घटना, महत्वपूर्ण यात्रा का वर्णन, कृषि संबंधी वार्तायें, जनसंख्या संबंधी सुचनाएँ आदि।

### 1.9.10 चलचित्र

भारत में चलचित्र का प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में अभी अधिक नहीं हो पाया है। दूसरे देशों में इसका प्रयोग बहुत किया जा रहा है, अनेक शैक्षणिक चलचित्र देश में बना लिये गये हैं। जो भूगोल विषय को पढ़ाने के लिए उपयोगी है।

चलचित्र की सहायता से भौगोलिक तथ्यों व वस्तुओं को श्रव्य व दृश्य दोनों ही ढंगों से प्रस्तुत किया जाता है। इनके माध्यम से भौगोलिक तथ्यों की वास्तविकता को प्रदर्शित किया जा सकता है। छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास किया जा सकता है। चलचित्र के माध्यम से भूगोल की शिक्षा रुचिकर बनाई जा सकती है।

ज्वालामुखी, पर्वत, मरुस्थल, एवं टुण्ड्रा प्रदेशों के रहन सहन व खानपान का ढंग आदि को हम चलचित्रों के माध्यम से उनके वास्तविक स्वरूपों में जान सकते हैं।

### 1.9.11 टेलीविजन

दृश्य श्रव्य सामग्री में टेलीविजन का भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इस यंत्र का प्रयोग विदेशों में विभिन्न विषयों की शिक्षा देने में किया जाने लगा है। भूगोल शिक्षण के लिये

टेलीविजन का प्रयोग सफलता पूर्वक किया जा सकता है। भूगोल के विभिन्न विषयों पर भाषण, भौगोलिक महत्व के स्थानों का प्रदर्शन, विभिन्न दृश्य, जंगल, कारखाने, मानव जीवन, रहन-सहन आवास, आदि बातों का ज्ञान टेलीविजन के माध्यम से कराया जा सकता है।

भूगोल शिक्षक को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि सहायक सामग्री केवल साधन मात्र हैं साध्य नहीं। इसलिये यह आवश्यक है कि उन सामग्री की सहायता से अधिकाधिक प्रभावी ढंग से भूगोल शिक्षक ने अपना अध्यापन कार्य करना चाहिये।

#### 1.10 भारतीय विद्यालयों में भूगोल शिक्षण की समस्याएँ

भारत की जनसंख्या लगातार बढ़ रही है। इतनी बड़ी जनसंख्या को सुविधापूर्ण कार्य देना बड़ा ही कठिन कार्य है। जनसंख्या वृद्धि, गरीबी, जैसी संगिन बीमारियों से हम पिछले कई दशकों से जूझ रहे हैं। इतनी बड़ी विद्यार्थियों संख्या को शिक्षा देना काफी मुश्किल साबित हो रहा है।

भारत वर्ष में भूगोल शिक्षण से संबंधित समस्याओं में विशेष है, स्कूल भवनों का अभाव, भूगोल कक्षाओं का अभाव। भूगोल एक ऐसा विषय है जिसके शिक्षण के लिये एक अलग से कमरा देना चाहिये, तथा उसमें भूगोल शिक्षण से संबंधित सारी सामग्री पर्याप्त मात्रा में हो जैसे ग्लोब, दीवार मानचित्र, रुढ़ चिन्हों का चार्ट, आदि। लेकिन जब स्कूल में पर्याप्त मात्रा में भूगोल कक्षा नहीं है और एक एक कक्षा में 70-75 बच्चों एक साथ बैठते हैं, जिसमें केवल एक समय में 35-40 बच्चों के बैठने का स्थान है। अगर ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को भूगोल विषय पढाया जाता है तो चित्र स्पष्ट है। इसके अलावा स्कूलों में

खासकर शासकीय स्कूलों में श्यामपट, ग्लोब, एटलस का आभाव है। यहाँ तक की जो तथ्य किताबों में है जैसे रुढ़ चिन्ह तो उनका चार्ट तक स्कूलों में उपलब्ध नहीं है। पृथ्वी की जानकारी पाठ्यक्रम में है। महाद्वीपों के बारे में पाठ्यक्रम में है। लेकिन दीवाल मानचित्र ही उपलब्ध नहीं हैं। इस स्थिति के अलावा प्रशिक्षित भूगोल शिक्षक भी नहीं हैं।

विद्यालयों में शिक्षकों का अभाव है। जहाँ शिक्षक है भी वहाँ शिक्षक भूगोल पाठ्यपुस्तक विधि से पढ़ाते हैं। पहले शिक्षक कक्षा में आता है उसके बाद जो अध्याय उसे पढ़ाना होता है वह पाठ अपनी किताब से निकालता है तथा छात्रों को भी किताब खोलने को कहता है, पढ़ाता है, उसके बाद अभ्यास के प्रश्न देकर भूगोल पढ़ाने का दायित्व पुरा करता है। इस तरीके से विद्यालय से संबंधित और शिक्षक से संबंधित कई सारी भूगोल शिक्षण की समस्याएँ हैं।

### 1.11 समस्या कथन

समस्या कथन रूप निम्नांकित तरीके से हैं।

“भूगोल विषय में शैक्षिक सामग्री के प्रयोग से कक्षा 8 के विद्यार्थियों की निष्पत्ति पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन”

### 1.12 शोध से जुड़े शब्दों की व्यावहारिक व्याख्या

#### ★ शैक्षिक सामग्री

इसका अर्थ भूगोल विषय पढ़ाते वक्त पाठ से संबंधित उपयोग की जाने वाली सामग्रियों से है।

उदाहरण के लिये:- श्यापट, मानचित्र, ग्लोब, एटलस, चार्ट, ग्राफ, मॉडल, एल.सी.डी, प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर आदि।

## ★ निष्पत्ति

निष्पत्ति का अर्थ भूगोल विषय से संबंधित प्राप्त गुणों से है।

### 1.13 अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य हैं।

1. भूगोल विषय में शैक्षिक सामग्री के प्रयोग से कक्षा 8 के विद्यार्थियों की निष्पत्ति पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. भूगोल विषय में शैक्षिक सामग्री के प्रयोग से कक्षा 8 के छात्रों की निष्पत्ति पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. भूगोल विषय में शैक्षिक सामग्री के प्रयोग से कक्षा 8 के छात्रों की निष्पत्ति पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

### 1.14 परिकल्पनाएँ

इस अध्ययन के लिये शून्य परिकल्पनाएँ ली गयी हैं। वह निम्नांकित हैं-

1. भूगोल विषय में शैक्षिक सामग्री के प्रयोग से कक्षा 8 के विद्यार्थियों की निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. भूगोल विषय में शैक्षिक सामग्री के प्रयोग से कक्षा 8 के छात्रों की निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. भूगोल विषय में शैक्षिक सामग्री के प्रयोग से कक्षा 8 के छात्रों की निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

### 1.15 शोध की आवश्यकता एवं महत्व

अधिकतर भूगोल के शिक्षक शिक्षण सहायक सामग्रियों के उपयोग के बिना भूगोल विषय पाठ्यपुस्तक विधि के द्वारा परीक्षा की तैयारी के उद्देश्य से रटवा लेते हैं। उनका कोई दूरगामी उद्देश्य नहीं होता।

बच्चों को भूगोल विषय पढ़ाते वक्त शैक्षिक सामग्री का उपयोग करके पढ़ाना कितना प्रभावी साबित होता है, इसका पता इस अध्ययन से लगाया गया है।

विद्यार्थियों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए, तथा शिक्षकों को उनके उत्तदायित्व का ज्ञान कराने के लिए इस शोध में भूगोल विषय में शैक्षिक सामग्री के प्रयोग से कक्षा 8 के विद्यार्थियों की भूगोल विषय संबंधी ज्ञान प्राप्ति में क्या प्रभाव हो रहा है। इसका अध्ययन किया गया है। इस शोध का उपयोग भूगोल विषय के अध्यापकों को अपने दैनंदिन अध्यापन में होगा। शैक्षिक नियोजन कर्ता को इस शोध का उपयोग भूगोल पाठ्यांश और भूगोल शैक्षिक सामग्री इनका मेल बिठाने में होगा।

पालकों को भूगोल विषय में शैक्षिक सामग्री की क्या भूमिका है। इसका पता इस अध्ययन द्वारा चलेगा। उसके फलस्वरूप पालक शैक्षिक सामग्री के प्रति अपनी भूमिका का निर्वाहन करेंगे।

प्रशासन को भूगोल विषय और शैक्षिक सामग्री इनका क्या संबंध है इसका पता चलेगा, भूगोल कक्ष की क्या आवश्यकता है, पाठशाला में भूगोल विषय संबंधित कौन-कौन सी शैक्षिक सामग्री होनी जरूरी है, विद्यार्थियों की दृष्टि से भूगोल की ज्ञान प्राप्ति में शैक्षिक सामग्री की क्या भूमिका है इसका पता चलेगा। इसके अनुरूप प्रशासक भूगोल संबंधी अपनी प्रशासन व्यवस्था को आकार देगा।

### 1.16 अध्ययन की सीमाएं

इस शोध की निम्नांकित सीमाएं हैं-

1. यह अध्ययन सिर्फ कक्षा 8 के विद्यार्थियों पर किया गया है।
2. यह अध्ययन करते वक्त किसी एक गाँव की एक पाठशाला ली गयी है।
3. यह अध्ययन सिर्फ भूगोल विषय से संबंधित है।